पाठ -18

नाखून क्यों बढ़ते हैं?

लेखक – हजारी प्रसाद द्विवेदी

कभी–कभी बच्चे ऐसे **प्रश्न करते हैं** कि हम जबाव नही दें पाते। ऐसा ही **प्रश्न** लेखक की बच्ची ने लेखक से पूछा कि आदमी के नाखून क्यों बढ़ते **हैं** तो वह सोच में पड़ जाता है कि हर तीसरे दिन नाखून बढ़ जाते हैं। बच्चे कुछ दिन तक अगर उन्हें बढ़ने दें, तो **माँ** बाप उन्हें अक्सर **डाँट** देते है। पर कोई नही जानता कि ये अभागे नाखून क्यों इस प्रकार बढ़ा करते हैं।

लेखक आगे कहता है कि आज से लाखों साल पहले आदिम युग में मनुष्य और पशु में कोई अंतर नहीं था। वह जानवरों की तरह गुफाओं में रहता होगा। पेड़ों से फल तोड़कर खाता होगा। झगड़ा होने पर जीवन रक्षा के लिए नाखूनों से, दाँतों स हमला करता होगा। किसी समय नाखून हथियार की तरह काम आते थे। तब नाखून बढ़ाना मनुष्य की जरूरत रही होगी। दाँत भोजन को काटने के लिए ही नहीं, एक दूसरे को काटने के काम **भी आते होंगे**। फिर धीरे–धीरे आदमी ने अपने शरीर के अंगों के अतिरिक्त बाहरी चीजों की सहायता लेनी **शुरू** की। पेड़ की डालें, टहनियाँ, छोटे–बडे पत्थर उसके हथियार बने। हमारे ग्रंथ 'रामायण' में राम की वानर सेना पर पेड़ की डालों, पत्थरों से हमला किया था। अपने दाँतों और नाखूनों से भी राक्षसी सेना को नोचने का काम किया था। धीरे–धीरे इंसान ने हडिडयों से हथियार बनाने आरम्भ किए। महर्षि दधीचि ने अपनी हड्डियों का दान दिया था। उन हड्डियों से देवताओं ने वज्र नामक एक अस्त्र बनाया, जिससे देवताओं के राजा इन्द्र ने वृतासुर का वध किया था। हड्डियों से बने हथियार बहुत मजबूत होते थे।

द्विवदीजी कहते हैं कि लेकिन आदमी को चैन **नही,** वह धीरे–धीरे लोहे से हथियार बनाने शुरू किए। मनुष्य ने गदा, तलवार, तीर आदि हथियारों का निर्माण किया। इतिहास आगे बढ़ता गया और मनुष्य ने नये–नये हथियार बनाना सीख लिया। आज बन्दूक, बम, मिसाइलों आदि का **निर्माण** किया जिससे मानव अपनी **पशुता** दिखाकर लाखो लोगों की जान लेता है। वह **अपने** हवाई जहाजों से **दुश्मन देशों में** बम गिराने लगा, जैसे द्वितीय **विश्व युद्ध** में अमेरिका ने जापान के **हिरोशिमा** और नागासाकी नगरों में बम गिराकर लाखों लोगों को मौत के घाट उतार दिया था। आज भी पूरा **विश्व** इस घटना को याद को करके सहम जाता है।

एक समय **जहाँ** जीवन रक्षा के लिए पहले मनुष्य **के** नाखून काम आते थे अब उनकी जगह आधुनिक हथियार ने ली है। जब हमारे नाखून **बढ़ते हैं** तो हमारे माता–पिता या बुजुर्ग बार–बार टोकते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि ये नाखून हमारे अंदर की **पशुता** की **निशानी** हैं। ये बार–बार बढ़ते रहेंगे और इन्हें बार बार काटते रहेंगे। पहले शायद नाखून काटने पर **डाँटा** जाता रहा होगा। जब जीवन रक्षा के उपाय थे। आज हमें इनकी हथियार के रूप में **आवश्यकता** नहीं है। आज हमारे पास अति आधुनिक और **प्रभावशाली** हथियार हैं। मनुष्य यह समझता है कि नाखून काटने से वह सभ्य, मानवीय, सुसंस्कृत हो जायेगा, लेकिन ऐसा नही है जब तक हम हथियारों से मनुष्य को मौत के घाट उतारते रहेंगे, तब तक पशु ही रहेंगे, नाखून काटने से कुछ नहीं होगा। लेखक को इस बात से दुख होता है और वह **निराश** भी होता है।

लेखक ने नाखूनों की उपयोगिता पर विचार किया है। पहले से नाखूनों को सजाने–सँवारने का प्रचलन है। संस्कृत के प्रसिद्ध ग्रंथ 'कामसूत्र' में भी नाखूनों को अलग–अलग आकारों में काटने का वर्णन मिलता है। कोई उन्हें गोल आकार, अर्ध चन्द्रमा, दाँतों के आकार में काटता था। लोग अपने नाखूनों को मोम से चिकना करते थे और फिर उन पर महावर लगाते थे। आज भी नाखूनों को नेल **पॉलिश** जगाकर सजाया जाता है और लम्बे नाखून रखना **फैशन** है। शारीरिक अवस्था का अध्ययन करने वाले प्राणीविज्ञानी कहलाते हैं। उन्होंने पता लगाया है कि मनुष्य के मन की तरह मनुष्य के शरीर में भी कुछ **प्रक्रियाएँ** अपने आप चलती रहती हैं। हमारे शरीर मेंएक ऐसा गुण भी है जो हमारे नियंत्रण के बिना अपना काम करता रहता है। जैसे–**साँस** का चलना, दिल का धड़कना, और भोजन का पचना इत्यादि। यह सब अपने आप चलता रहता है। इसी प्रकार नाखूनों का बढ़ना, बालों का बढ़ना, दाँतों का टूटकर दुबारा आना, ये सभी हमारे **वश** में नहीं हैं। स्वयं ही ये प्रवृत्तियाँ हमारे जन्म के साथ उत्पन्न होती हैं। नाखूनो के बढ़ने पर हमारा **वश** नहीं है। अधिक से अधिक उन्हें हम काट सकते हैं। नाखूनों का बढ़ना पशुता की प्रवृत्ति का सिर उठाना है और उन्हें काटना मतलब पशुता को कम करना है।

लेखक आगे कहते **हैं** कि जब हमारा **देश** आजाद हुआ, तब अंग्रेजी समाचार पत्रों में 'इंडिपेंडेस' शब्द लिखा था और हिन्दी समाचार पत्रों में 'स्वधीनता दिवस' लिखा हुआ था। लेखक कहते है कि 'इंडिपेंडेस' का अनुवाद अनधीनता अर्थात् किसी के भी आधीन न होना, स्वाधीनता नहीं। तो सभी समाचार पत्रों ने हिन्दी में 'स्वधीनता', या स्वतन्त्रता दिवस' क्यों लिखा? तो हर भाषा एक **विशेष** संस्कृति को जन्म देती है। भारतीय संस्कृति में **अनुशासन** बाहर से थोपा गया **अनुशासन** नहीं है। हमने अपने व्यवहार को उत्कृष्ट और **अनुशासित** रखने के लिए स्वयं का बंधन स्वीकार किया है इसीलिए स्वतन्त्रता, स्वराज्य, स्वाधीनता जैसे शब्दों का प्रयोग हम करते हैं। इनमें 'स्व' का बंधन मौजूद है। भारतीय संस्कृत में उच्छृंखलता को अच्छा नहीं माना जाता। **यहाँ** समाज के हित में 'स्व' का **अंकुश आवश्यक** है। **यहाँ** मनुष्य के प्रत्येक व्यवहार का मूल्य इस आधार पर आँका जाता है कि वह समाज के हित में कितना है। भारतीय संस्कृति में हिंसा कराना पाप और अपराध दोनों हैं किन्तु 'अहिंसा परमो धर्म' द्वारा स्वयं पर नियन्त्रण रखकर औरो को भी हिंसा करने से रोका जाता है।